@gmail.com, vidhankesarinews@gmail.com

हिन्दी दैनिक

विधान केसरी

...खबर सिर्फ आपके लिए

लखनऊ संस्करण, मंगलवार 25 मई 2021 (वर्ष-8 अंक 228), मूल्य -2.00 रुपये पृष्ठ-8

आत्म निर्भर समूह की महिलाओं... पेज-3

सभी हास्पिटल अपने स्टाफ को... पेज-8

योगी का नौकरशाही प

अखिलेश के संसदीय क्षेत्र आजमगढ़ पहुंचे सीएम योगी, बोले | यूपी कोरोना की

गर्मी में करें पशुओं की विशेष देखभाल: डॉ. उपाध्याय

कानपुर (विधान केसरी)। सीएसए के पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष एवं प्रोफेसर डॉ पीके उपाध्याय ने गर्मी में करें पशुओं की विशेष देखभाल विषय पर जानकारी दी है। डॉ उपाध्याय ने बताया कि इस समय मौसम में अचानक बदलाव हो रहा है मौसम में अचानक परिवर्तन होने से पशु अपने आप को बदलते मौसम के अनुरूप ढाल नहीं पाता, जिसके कारण उनका दूध उत्पादन कम हो जाता है,साथ ही पशु के प्रजनन एवं स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। उन्होंने पशुपालक भाइयों को बताया की भैंसो में प्रजनन का कार्य सुचारू रूप से करना है, तो भैंसों को चराई करने पर उनके नहाने के लिए तालाबो में नहलावे । संकर नस्ल के पशुओं पर पानी का फुहारा अथवा पंखा चलाना लाभदायक रहेगा, क्योंकि गर्मी बढ़ने के साथ ही उनमें दूध उत्पादन कम होने की समस्या देखने को मिलती है। इसके साथ उन्होंने कहा कि पशुओं को किसी बाड़े में रखते हैं तो उन पर जूट के पुराने बोरों के परदे अवश्य लगाएं एवं उन पर पानी का छिड़काव करते रहे, जिससे उस बाड़े का तापमान कम बना रहे और ठंडक बनी रहे। इन गर्मी के दिनों में हरे चारे की कमी नहीं होनी चाहिए। इसके लिए आवश्यक है कि पशुपालक भाई अपने खेतों पर चारे की हरी फसलों के लिए एमपी चरी, मक्का एवं बाजरा आदि अदलहनी चारे के साथ ही साथ लोबिया जैसे दलहनी चारों का भी उत्पादन करें। दुधारू पशुओं को यह दलहनी और अदलहनी चारा मिला करके देते हैं, तो उन में दूध की मात्रा बढ़ती है। यदि हरे चारे की पर्याप्त मात्रा उपलब्ध नहीं हो पा रही है, तो किसान भाई ऐसे समय में भूसे में शीरा अथवा गुड़ का घोल छिड़ककर पशुओं को दें, जिससे दुग्ध उत्पादन मे कमी देखने को नही मिलती है। दुधारू पशुओं को दाना देने के लिए भैंसों को शरीर रक्षा अर्थात जीवन निर्वाह के लिए 1.5 किलोग्राम दाना एवं दुग्ध उत्पादन के लिए प्रति लीटर दुग्ध पर 500 ग्राम दाना देना चाहिए। इसके अतिरिक्त दुधारू पशुओं को दाने के साथ 50 से 60 ग्राम खनिज लवण एवं 40 ग्राम नमक प्रतिदिन अवश्य दें। पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ पीके उपाध्याय ने बताया कि अपने दुधारू पशुओं को अंतः परजीवी एवं बाह्य परजीवीयों से बचाने के लिए समय-समय पर अंतः कृमिनाशी दवा पशु चिकित्सक की सलाह से अवश्य दें। पशुओं को बाह्य परजीवीयों से बचाने के लिए ब्यूटाक्स 0.2% अथवा मेलाथियान 0.1% का घोल बनाकर, इससे पशुओं के शरीर को कपड़े अथवा टाट से अच्छी तरह से उसके शरीर को भिगोकर आधे घंटे के लिए धूप में खड़ा कर दें, जिससे

उसके शरीर पर लगे समस्त बाह्य परजीवी मर करके झड़ जाते हैं।

पशु शाला की सफाई का विशेष ध्यान रखें। पशुशाला में दुहाई से एक घंटे पूर्व फिनायल आदि का प्रयोग अवश्य करें दूध निकालते समय हाथों को अच्छी तरह से साबुन से धो लें एवं नाखून कटे होने चाहिए,दुहाई से पूर्व थनों को लाल दवा और नीम के घोल से धुल कर किसी साफ तौलिए से पोंछ कर सूखे हाथों से दुहाई करनी चाहिए।

राष्ट्रीय सहारा
कानपुर • मंगलवार • 25 मई • 2021 5

गर्मी में करें पशुओं की विशेष देखभाल : डॉ. उपाध्याय

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

कानपुर।

सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर डॉ. पीके उपाध्याय ने पशुपालकों के लिए जारी सलाह में कहा है कि गर्मी में पशुओं की विशेष देखभाल पर ध्यान देने की जरूरत है। मौसम में अचानक बदलाव से पशु अपने आप को बदलते मौसम के अनुरूप ढाल नहीं पाते हैं, जिसके कारण उनमें दूध उत्पादन कम हो जाता है। साथ ही पशुओं के प्रजनन एवं स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

उन्होंने कहा की भैंसों में प्रजनन का कार्य सुचारू रूप से करने के लिए भैंसों को चराई करने के बाद उन्हें तालाब में नहलाना चाहिए। संकर नस्ल के पशुओं पर पानी का फुहारा अथवा पंखा चलाना लाभदायक रहेगा, क्योंकि गर्मी बढ़ने के साथ ही उनमें दूध उत्पादन कम होने की समस्या देखने को मिलती है। पशुओं को रखने वाले बाड़े में जूट के पुराने बोरों के पर्दे अवश्य लगाएं एवं उन पर पानी का छिड़काव करते रहें। ताकि बाड़े का तापमान कम बना रहे और ठंडक बनी रहे।

डॉ. उपाध्याय ने कहा कि गर्मी के दिनों में हरे चारे की भी कमी नहीं होनी चाहिए। इसके लिए किसान अपने खेतों पर चारे की हरी फसलों के लिए एमपी चरी, मक्का एवं बाजरा आदि अदलहनी चारे के साथ ही लोबिया जैसी दलहनी चारे का उत्पादन कर सकते हैं। दुधारू पशुओं को दलहनी और अदलहनी चारा मिलाकर देने से उनमें दूध की मात्रा बढ़ती है। यदि हरे चारे की पर्याप्त मात्रा उपलब्ध न हो पा रही हो, तो किसान भूसे में शीरा अथवा गुड़ का घोल छिड़ककर पशुओं को दें। भैंसों को शरीर रक्षा एवं जीवन निर्वाह के लिए 1.5 किलोग्राम दाना एवं दुग्ध उत्पादन के लिए प्रति लीटर दुग्ध पर 500 ग्राम दाना देना चाहिए। इसके अतिरिक्त दुधारू पशुओं को 50 से 60 ग्राम खनिज लवण व 40 ग्राम नमक भी प्रतिदिन अवश्य दिया जाए।

उन्होंने कहा कि दुधारू पशुओं को अंतः परजीवी एवं बाह्य परजीवियों से बचाने के लिए समय-समय पर अंतर कृमि नाशक दवा पशु चिकित्सक की सलाह से अवश्य दें। पशुओं को बाहरी परजीवियों से बचाने के लिए बूटाकस 0.2 प्रतिशत मेलाथियान 0.1 प्रतिशत का घोल बना कर उसके शरीर को भिगोकर कपड़े अथवा टाट से अच्छी तरह ढक कर आधे घंटे के लिए धूप में खड़ा कर दें। इससे उसके शरीर पर लगे बाहरी परजीवी मर करके झड़ जाते हैं। पशुशाला की सफाई का विशेष ध्यान रखना जरूरी है। पशुशाला में दुहाई से 1 घंटे पूर्व फिनायल आदि का प्रयोग कर सफाई करनी चाहिए। हाथों को अच्छी तरह साबुन से धोकर एवं नाखून काट कर ही दूध दुहाई का काम करना चाहिए। दुहाई से पूर्व थनों को लाल दवा और नीम के घोल से धुलकर किसी साफ तौलिए से पोंछकर सूखे हाथों से दुहाई करनी चाहिए।

सीएसए के प्रोफेसर ने दी पशुपालकों को सलाह

बीमारियों से पशुओं के बचाव के लिए साफ-सफाई जरूरी

गर्मी में होती है दुग्ध उत्पादन कम होने की समस्या

डॉ. पीके उपाध्याय।

25-may-2021_compressed-1.pdf - Read-only

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

■ लखनऊ व झांसी से प्रकाशित ■ www.spashtawaz.com

स्पष्ट आवाज़

लखनऊ, मंगलवार, 25 मई, 2021 वर्ष : 17, अंक: 331 पृष्ठ : 12, मूल्य: ₹3

धारदार हथियार से महिला को मौत के... 2 स्वास्थ्य केंद्र पर कोविड टीका अवश्य... 2 देश को बहुआयामी रक्षा सुधारों की जरूरत... 4

गर्मी में करें पशुओं की विशेष देखभालः डॉ. उपाध्याय

कानपुर स्पष्ट आवाज। सीएसए के पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष एवं प्रोफेसर डॉ पीके उपाध्याय ने गर्मी में करें पशुओं की विशेष देखभाल विषय पर जानकारी दी है। डॉ उपाध्याय ने बताया कि इस समय मौसम में अचानक बदलाव हो रहा है मौसम में अचानक परिवर्तन होने से पशु अपने आप को बदलते मौसम के अनुरूप ढाल नहीं पाता, जिसके कारण उनका दूध उत्पादन कम हो जाता है, साथ ही पशु के प्रजनन एवं स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। उन्होंने पशुपालक भाइयों को बताया की भैंसे में प्रजनन का कार्य सुचारू रूप से करना है, तो भैंसों को चराई करने पर उनके नहाने के लिए तालाबो में नहलाये। संकर नस्ल के पशुओं पर पानी का फुहारा अथवा पंखा चलाना लाभदायक रहेगा, क्योंकि गर्मी बढ़ने के साथ ही उनमें दूध उत्पादन कम होने की समस्या देखने को मिलती है। इसके साथ उन्होंने कहा कि पशुओं को किसी बाड़े में रखते हैं तो उन पर जूट के पुराने बोरों के परदे अवश्य लगाएं एवं उन पर पानी का छिड़काव करते रहे, जिससे उस बाड़े का तापमान कम बना रहे और ठंडक बनी रहे।

गर्मी में करें पशुओं की विशेष देखभाल : डॉ. पी. के. उपाध्याय

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह द्वारा वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में सोमवार को विश्वविद्यालय के पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष एवं प्रोफेसर डॉ. पी.के. उपाध्याय ने गर्मी में करें पशुओं की विशेष देखभाल विषय पर जानकारी दी है। डॉ उपाध्याय ने बताया कि इस समय मौसम में अचानक बदलाव हो रहा है। मौसम में अचानक परिवर्तन होने से पशु अपने आप को बदलते मौसम के अनुरूप ढाल नहीं पाता, जिसके कारण उनका दूध उत्पादन कम हो जाता है, साथ ही पशु के प्रजनन एवं स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। उन्होंने पशुपालक भाइयों को बताया की भैंसों में प्रजनन का कार्य सुचारू रूप से करना है, तो भैंसों को चराई करने पर उनके नहाने के लिए तालाब में नहलाएं। संकर नस्ल के पशुओं पर पानी का फुहारा अथवा पंखा चलाना लाभदायक रहेगा, क्योंकि गर्मी बढ़ने के साथ ही उनमें दूध उत्पादन कम होने की समस्या देखने को मिलती है। इसके साथ उन्होंने कहा कि पशुओं को किसी बाड़े में रखते हैं तो उन पर जूट के पुराने बोरों के परदे अवश्य लगाएं एवं उन पर पानी का छिड़काव करते रहे, जिससे उस बाड़े का तापमान कम बना रहे और ठंडक बनी रहे। इन गर्मी के दिनों में हरे चारे की कमी नहीं होनी चाहिए। इसके लिए आवश्यक है कि पशुपालक भाई अपने खेतों पर चारे की हरी फसलों के लिए एमपी चरी, मक्का एवं बाजरा आदि दलहनी चारे के साथ ही साथ लोबिया जैसे दलहनी चारा का भी उत्पादन करें। दुधारू पशुओं को यह दलहनी और अदलहनी चारा मिला करके देते हैं, तो उन में दूध की मात्रा बढ़ती है। यदि हरे चारे की पर्याप्त मात्रा उपलब्ध नहीं हो पा रही है, तो किसान भाई ऐसे समय में भूसे में शीरा अथवा गुड़ का घोल छिड़ककर पशुओं को दें, जिससे दुग्ध उत्पादन मे कमी देखने को नही मिलती है। दुधारू पशुओं को दाना देने के लिए भैंसों को शरीर रक्षा अर्थात जीवन निर्वाह के लिए 1.5 किलोग्राम दाना एवं दुग्ध उत्पादन के लिए प्रति लीटर दुग्ध पर 500 ग्राम दाना देना चाहिए। इसके अतिरिक्त दुधारू पशुओं को दाने के साथ 50 से 60 ग्राम खनिज लवण एवं 40 ग्राम नमक प्रतिदिन अवश्य दें।

डॉ. पी.के. उपाध्याय ने बताया कि अपने दुधारू पशुओं को अंतः परजीवी एवं बाह्य परजीवियों से बचाने के लिए समय-समय पर अंतः कृमिनाशक दवा पशु चिकित्सक की सलाह से अवश्य दें। पशुओं को बाह्य परजीवियों से बचाने के लिए ब्यूटाक्स 0.2% अथवा मेलाथियान 0.1% का घोल बनाकर, इससे पशुओं के शरीर को कपड़े अथवा टाट से अच्छी तरह से उसके शरीर को भिगोकर आधे घंटे के लिए धूप में खड़ा कर दें, जिससे उसके शरीर पर लगे समस्त बाह्य परजीवी मर करके झड़ जाते हैं। पशुशाला की सफाई का विशेष ध्यान रखें। पशुशाला में दुहाई से एक घंटे पूर्व फिनायल आदि का प्रयोग अवश्य करें दूध निकालते समय हाथों को अच्छी तरह से साबुन से धो लें एवं नाखून कटे होने चाहिए।दुहाई से पूर्व थनों को लाल दवा और नीम के घोल से धुल कर किसी साफ तौलिए से पोंछ कर सूखे हाथों से दुहाई करनी चाहिए। किसान पशुओं को कोई भी दवा आप अपनी तरफ से न दे कर के अपने नजदीक के पशु चिकित्सालय से संपर्क करने के उपरांत ही कोई दवा पशुओं को दें।

अमर उजाला

मंगलवार • 25.05.2021

05

kanpur.amarujala.com

पशुओं को खिलाएं हरा चारा

कानपुर। सीएसए के डॉ. पीके उपाध्याय ने सोमवार को गर्मी में करें पशुओं की विशेष देखभाल विषय पर एडवाइजरी जारी की। बताया कि इस समय मौसम में अचानक बदलाव हो रहा है। पशुओं को जिस बाड़े में रखते हैं तो उन पर जूट के पुराने बोरों के परदे अवश्य लगाएं और पानी का छिड़काव करते रहें। दुधारू पशुओं को दलहनी और अदलहनी चारा मिला कर दें। यदि हरे चारे की पर्याप्त मात्रा हो तो भूसे में शीरा या गुड़ का घोल मिलाकर पशुओं को दें। भैंसों को प्रति लीटर दूध पर 500 ग्राम दाना देना चाहिए। बाह्य परजीवियों से बचाने के लिए पशुओं के शरीर को कपड़े या टाट को ब्यूटाक्स 0.2 प्रतिशत या मेलाथियान 0.1 प्रतिशत के घोल से भिगोकर ढंकें और पशु को आधा घंटा धूप में खड़ा कर दें। (संवाद)

लखनऊ संस्करण
वर्ष-05, अंक -209
मंगलवार, 25 मई, 2021
पृष्ठ 12
मूल्य 3 रु
लखनऊ, नोएडा, झांसी और देहरादून से प्रकाशित
For epaper → www.updainikbhaskar.com

दैनिक भास्कर

देश का सबसे विश्वसनीय अखबार

गर्मी में करें पशुओं की विशेष देखभालः डॉ. उपाध्याय

भास्कर न्यूज

कानपुर। सीएसए के पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष एवं प्रोफेसर डॉ पीके उपाध्याय ने गर्मी में करें पशुओं की विशेष देखभाल विषय पर जानकारी दी है। डॉ उपाध्याय ने बताया कि इस समय मौसम में अचानक बदलाव हो रहा है मौसम में अचानक परिवर्तन होने से पशु अपने आप को बदलते मौसम के अनुरूप ढाल नहीं पाता, जिसके कारण उनका दूध उत्पादन कम हो जाता है,साथ ही पशु के प्रजनन एवं स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। उन्होंने पशुपालक भाइयों को बताया की भैंसो में प्रजनन का कार्य सुचारू रूप से करना है, तो भैंसों को चराई करने पर उनके नहाने के लिए तालाबो में नहलाये । संकर नस्ल के पशुओं पर पानी का फुहारा अथवा पंखा चलाना लाभदायक रहेगा, क्योंकि गर्मी बढ़ने के साथ ही उनमें दूध उत्पादन कम होने की समस्या देखने को मिलती है। इसके साथ उन्होंने कहा कि पशुओं को किसी बाड़े में रखते हैं तो उन पर जूट के पुराने बोरों के परदे अवश्य लगाएं एवं उन पर पानी का छिड़काव करते रहे, जिससे उस बाड़े का तापमान कम बना रहे और ठंडक बनी रहे। इन गर्मी के दिनों में हरे चारे की कमी नहीं होनी चाहिए। इसके लिए आवश्यक है कि पशुपालक भाई अपने खेतों पर चारे की हरी फसलों के लिए एमपी चरी, मक्का एवं बाजरा आदि अदलहनी चारे के साथ ही साथ लोबिया जैसे दलहनी चारों का भी उत्पादन करें। दुधारू पशुओं को यह दलहनी और अदलहनी चारा मिला करके देते हैं, तो उन में दूध की मात्रा बढ़ती है। यदि हरे चारे की पर्याप्त मात्रा उपलब्ध नहीं हो पा रही है, तो किसान भाई ऐसे समय में भूसे में शीरा अथवा गुड़ का घोल छिड़ककर पशुओं को दें, जिससे दुग्ध उत्पादन में कमी देखने को नहीं मिलती है। दुधारू पशुओं को दाना देने के लिए भैंसों को शरीर रक्षा अर्थात जीवन निर्वाह के लिए 1.5 किलोग्राम दाना एवं दुग्ध उत्पादन के लिए प्रति लीटर दुग्ध पर 500 ग्राम दाना देना चाहिए। इसके अतिरिक्त दुधारू पशुओं को दाने के साथ 50 से 60 ग्राम खनिज लवण एवं 40 ग्राम नमक प्रतिदिन अवश्य दें। पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ पीके उपाध्याय ने बताया कि अपने दुधारू पशुओं को अंतः परजीवी एवं बाह्य परजीवीयों से बचाने के लिए समय-समय पर अंतः कृमिनाशी दवा पशु चिकित्सक की सलाह से अवश्य दें।

25 may_jan express.pdf - Read-only

जन एक्सप्रेस

janexpressive

लखनऊ, मंगलवार, 25 मई, 2021 वर्ष : 12, अंक : 220, पृष्ठ : 12, मूल्य ₹ 3.00/-

www.janexpressive.com/epaper

'गर्मी में कैसे करें पशुओं की विशेष देखभाल?' विषय पर दी जानकारी

जन एक्सप्रेस संवाददाता

कानपुर नगर। मौसम के अचानक बदलने से पशु अपने को मौसम के अनुरूप नहीं ढाल पाते हैं जिससे उनके दूध उत्पादन, प्रजनन एवं स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है गर्मी बढ़ने पर पशुओं को बाड़े में रखकर और जूट के पुराने बोरो के पर्दे लगाकर उन पर पानी का छिड़काव करने से बाड़े का तापमान कम होता है जिससे ठंडक बनी रहती है। सीएसएयू के पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष एवं प्रोफेसर डॉ. पीके उपाध्याय ने गर्मी में करें पशुओं की विशेष देखभाल विषय पर जानकारी देते हुए बताया कि दुधारू पशुओं को दलहनी और अदलहनी चारा मिलाकर देने से दूध की मात्रा बढ़ती है हरा चारा पर्याप्त मात्रा पर उपलब्ध ना होने पर भूसे मे शीरा अथवा गुड़ का घोल छिड़ककर पशुओं को देना चाहिए दुधारू पशुओं को दाना देने के लिए भैंसों को जीवन निर्वाह के लिए 1.5 किलोग्राम दाना एवं दुग्ध उत्पादन के लिए प्रति लीटर दुग्ध पर 500 ग्राम दाना देना चाहिए।

इसके अलावा दुधारू पशुओं को दाने के साथ 50 से 60 ग्राम खनिज लवण और 40 ग्राम नमक प्रतिदिन अवश्य दें। पशुओं को बाह्य परजीवीयों से बचाने के लिए ब्यूटाक्स 0.2 प्रतिशत अथवा मेलाथियान 0.1 प्रतिशत का घोल बनाकर, इससे पशुओं के शरीर को कपड़े अथवा टाट से अच्छी तरह से उसके शरीर को भिगोकर आधे घंटे के लिए धूप में खड़ा कर दें, जिससे उसके शरीर पर लगे समस्त बाह्य परजीवी मर करके झड़ जाते हैं। उन्होंने किसानों को पशुओं को कोई भी दवा अपनी तरफ ना देकर नजदीकी पशु चिकित्सालय में संपर्क करने की सलाह दी।

www.facebook.com/worldkhabarexpress www.twitter.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpress https://worldkhabarexpress.media/

WORLD खबर EXPRESS

WORLD
ख़बर एक्सप्रेस

अंक : 238 कानपुर नगर

जैकलीन ने मुंबई पुलिस का जताया आभार

पेज 8

24 मई 2021, सोमवार

www.worldkhabarexpress.media MID DAY E-PAPER www.worldkhabarexpress.com

सीएसए के पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग के डॉ. पीके उपाध्याय ने पशुपालकों को दिए टिप्स

गर्मी में करें पशुओं की विशेष देखभाल

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. पीके उपाध्याय ने टिप्स दिए। उन्होंने पशु पालकों से कहा कि गर्मी में पशुओं की विशेष देखभाल करें। डॉ. उपाध्याय ने बताया कि इस समय मौसम में अचानक बदलाव हो रहा है। मौसम में अचानक परिवर्तन होने से पशु अपने आप को बदलते मौसम के अनुरूप ढाल नहीं पाते हैं जिस कारण उनका दूध उत्पादन कम हो जाता है। साथ ही पशुओं के प्रजनन एवं स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। उन्होंने बताया की भैंसों में प्रजनन का कार्य सुचारू रूप से करना है तो भैंसों के चराई करने पर उन्हें तालाबों में नहलाएं। संकर नस्ल के पशुओं पर पानी का फुहारा या पंखा चलाना लाभदायक रहेगा क्योंकि गर्मी बढ़ने के साथ ही उनमें दूध उत्पादन कम होने की समस्या देखने को मिलती है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि पशुओं को किसी बाड़े में रखते हैं तो उन पर जूट के पुराने बोरों के पर्दे जरूर लगाएं औश्र उन पर पानी का छिड़काव करते रहे जिससे उस बाड़े का तापमान कम बना रहे और ठंडक रहे। गर्मी के दिनों में हरे चारे की कमी नहीं होनी चाहिए। इसके लिए आवश्यक है कि पशुपालक अपने खेतों पर चारे की हरी फसलों के लिए एमपी चरी, मक्का व बाजरा आदि अदलहनी चारे के साथ ही लोबिया जैसे दलहनी चारों का भी उत्पादन करें। दुधारू पशुओं को यह दलहनी और अदलहनी चारा मिला कर देते हैं तो उन में दूध की मात्रा बढ़ती है। यदि हरे चारे की पर्याप्त मात्रा उपलब्ध नहीं हो पा रही है तो किसान भूसे में शीरा या गुड़ का घोल छिड़ककर पशुओं को दें जिससे दुग्ध उत्पादन मे कमी नहीं होती है। दुधारू पशुओं को दाना देने के लिए भैंसों को शरीर रक्षा या जीवन निर्वाह के लिए 1.5 किलोग्राम दाना और दुग्ध उत्पादन के लिए प्रति लीटर दुग्ध पर 500 ग्राम दाना देना चाहिए। इसके अलावा दुधारू पशुओं को दाने के साथ 50 से 60 ग्राम खनिज लवण एवं 40 ग्राम नमक प्रतिदिन अवश्य दें। डॉ. उपाध्याय ने बताया कि अपने दुधारू पशुओं को अंतः परजीवी और बाह्य परजीवीयों से बचाने के लिए समय-समय पर अंतः कृमिनाशी दवा पशु चिकित्सक की सलाह से अवश्य दें। पशुओं को बाह्य परजीवीयों से बचाने के लिए ब्यूटाक्स 0.2 या मेलाथियान 0.1 फीसदी का घोल बनाकर दें। इससे पशुओं के शरीर को कपड़े या टाट से अच्छी तरह से भिगोकर आधे घंटे के लिए धूप में खड़ा कर दें जिससे उसके शरीर पर लगे समस्त बाह्य परजीवी मर कर झड़ जाएं। पशुशाला की सफाई का विशेष ध्यान रखें। पशुशाला में दुहाई से एक घंटे पूर्व फिनायल का प्रयोग अवश्य करें। दूध निकालते समय हाथों को अच्छी तरह से साबुन से धो लें।